

योएल की पुस्तक और लाओदीकियाई सेवेंथ-डे एडवेंटिस्ट कलीसिया - संख्या तैंतीस

Jeff Pippenger

2026-01-21

संख्या तैंतीस

रविवार के क्रानून के समय एक लाख चवालीस हज़ार का भविष्यवाणी के अनुसार ग्यारहवें घंटे के मजदूरों से सामना होता है। एक लाख चवालीस हज़ार पहले ही मुद्रांकित हैं, और तब वे महान भीड़ से बाबुल से निकल आने तथा सातवें दिन के सब्त के पक्ष में उनके साथ खड़े होने का आह्वान करते हैं। परमेश्वर के घराने के विषय का न्याय रविवार के क्रानून पर समाप्त होता है, और तत्पश्चात् न्याय अन्यजातियों की ओर, अर्थात् महान भीड़—परमेश्वर की दूसरी भेड़-बाड़—की ओर स्थानांतरित हो जाता है। प्रकाशितवाक्य अध्याय सात दोनों समूहों की पहचान कराता है, और पाँचवीं मुहर में अंधकार युग के शहीद यह पूछते हैं, “कब तक” उन्हें प्रतीक्षा करनी होगी कि परमेश्वर उनकी शहादत के कारण पापाई सत्ता का न्याय करे? उन्हें कहा जाता है कि वे अपनी कब्रों में विश्राम करें, जब तक पापाई उत्पीड़न के शहीदों का दूसरा समूह पूर्ण न हो जाए; और उन्हें श्वेत वस्त्र दिए जाते हैं। प्रकाशितवाक्य अध्याय सात की महान भीड़ श्वेत वस्त्र पहने हुए है, क्योंकि वह शीघ्र आने वाले रविवार के क्रानून के संकट में पापाई शहादत के दूसरे समूह का प्रतिनिधित्व करती है। प्रकाशितवाक्य सात और पाँचवीं मुहर इन दोनों समूहों का वर्णन करते हैं, जैसे स्मिर्ना और फिलाडेल्फिया की कलीसियाएँ भी। स्मिर्ना अंतिम पापाई रक्तस्नान के शहीदों का प्रतिनिधित्व करती है, और फिलाडेल्फिया एक लाख चवालीस हज़ार का प्रतिनिधित्व करती है।

पतरस कैसरिया फिलिप्पी में तृतीय घड़ी में है, और 'छह दिन' के पश्चात्—छह घंटे नहीं—वह रविवार-विधान की दहलीज़ पर होगा, जो नवम घड़ी है।

और छः दिनों के पश्चात् यीशु पतरस, याकूब और उसके भाई यूहन्ना को साथ लेकर उन्हें एकांत में एक ऊँचे पर्वत पर ले गया। और वह उनके सामने रूपान्तरित हो गया; उसका मुख सूर्य के समान चमका, और उसके वस्त्र प्रकाश के समान श्वेत थे। और देखो, मूसा और एलिय्याह उन्हें दिखाई दिए, जो उसके साथ बातें कर रहे थे। मत्ती 17:1-3.

रविवार के विधान के समय, एक लाख चवालीस हजार भविष्यसूचक अर्थ में महान भीड़ से मिलते हैं। एलिय्याह उन एक लाख चवालीस हजार का प्रतिनिधित्व करता है जो मृत्यु का स्वाद नहीं चखते, और मूसा उनका प्रतिनिधित्व करता है जो प्रभु में मरते हैं। वे रविवार के विधान के समय मसीह के साथ खड़े हैं, जहाँ मसीह अपने महिमा के राज्य का अभिषेक करता है, जैसे उसने कूस पर अपने अनुग्रह के राज्य की स्थापना की थी। यदि आप अभी भी उस तर्क में संलग्न हैं जिसे हम तीसरे से नौवें घंटे तक की छह घंटे की अवधि के संबंध में प्रस्तुत कर रहे हैं, तो एक अत्यन्त विशेष चित्रण को देखना आवश्यक है।

कैसरिया फिलिप्पी का तीसरा घंटा, कैसरिया मारितिमा के नवें घंटे के ओमेगा का अल्फ़ा है। मैं यह इंगित कर रहा हूँ कि छह घंटे बाद नहीं, बल्कि छह दिन बाद, पतरस रूपान्तरण के पर्वत पर है, जो उस इतिहास का भी निरूपण करता है जो रविवार के विधान पर, जो कि नवाँ घंटा है, अपनी परिणति को प्राप्त होता है। छह दिनों की अवधि, छह घंटों की अवधि के साथ मेल खाती है, परन्तु केवल कैसरिया से कैसरिया के एक फ़ैक्टल के रूप में। अत्यन्त विशेष यह है कि इतिहास के एक फ़ैक्टल का, जो छह-घंटे की अवधि के इतिहास के भीतर स्थित है, यह परिघटना ठीक वही है जो तब घटित होती है जब आप पेन्टेकोस्ट के काल पर विचार करते हैं। मसीह की मृत्यु से पेन्टेकोस्ट तक के छह घंटे, कूस से लेकर ईस्वी 34 तक की अवधि का एक फ़ैक्टल हैं, जब पवित्र सप्ताह का समापन हुआ और सुसमाचार अन्यजातियों के पास गया।

अब अभिमान और ईर्ष्या ने प्रकाश के प्रवेश के लिए द्वार बंद कर दिया। यदि चरवाहों और ज्ञानी पुरुषों द्वारा लाए गए समाचारों पर विश्वास किया जाता, तो वे याजकों और रब्बियों को अत्यंत अवांछनीय स्थिति में डाल देते, उनके इस दावे का खंडन करते कि वे परमेश्वर के सत्य के प्रतिपादक हैं। ये विद्वान शिक्षक इस तक न झुकते कि वे उन लोगों से शिक्षा लें, जिन्हें वे 'अन्यजात' कहते थे। वे कहते थे कि यह संभव नहीं कि परमेश्वर उन्हें छोड़कर अज्ञानी चरवाहों या खतनारहित अन्यजातियों से संवाद करे। उन्होंने यह निश्चय किया कि उन समाचारों के प्रति, जो राजा हेरोदेस और समस्त यरूशलेम को उत्तेजित कर रहे थे, अपना तिरस्कार दिखाएँ। वे यह देखने के लिए कि क्या ये बातें सत्य हैं, बेतलेहेम तक भी जाने को तैयार न हुए। और उन्होंने लोगों को यह मानने के लिए प्रवृत्त किया कि यीशु में रुचि एक कट्टरतापूर्ण उन्माद है। यहीं से याजकों और रब्बियों द्वारा मसीह का अस्वीकार आरम्भ हुआ। इसी बिंदु से उनका अभिमान और हठ दृढ़ होकर उद्धारकर्ता के प्रति स्थायी घृणा में परिवर्तित हो गया। जब परमेश्वर अन्यजातियों के लिए द्वार खोल रहा था, तब यहूदी नेता अपने लिए ही द्वार बंद कर रहे थे। युगों की अभिलाषा, 62.

पवित्र सप्ताह के मध्य मसीह को क्रूस पर चढ़ाया गया। साढ़े तीन वर्ष बाद स्तिफनुस को पत्थरों से मारा गया, और कुर्नेलियुस ने पतरस को बुलाया। क्रूस के साढ़े तीन वर्ष पश्चात प्राचीन इस्राएल के लिए अनुग्रह-काल पूर्णतः समाप्त हो गया। तब स्तिफनुस ने स्वर्ग की ओर दृष्टि की और मसीह को खड़ा हुआ देखा; मसीह का यह खड़ा होना दानिय्येल 12:1 में अनुग्रह-काल के समापन का प्रतीक है। प्राचीन इस्राएल के लिए द्वार बंद हो गया और अन्यजातियों के लिए खुल गया।

मसीह की मृत्यु के नौवें पहर से लेकर, नौवें पहर पर हुई स्तिफनुस की मृत्यु और पतरस की बुलाहट तक की अवधि में, कुर्नेलियुस और स्तिफनुस दो साक्षी हैं कि बारह सौ साठ भविष्यवाणी के दिन पूरित हुए। मृत्यु के नौवें पहर से मृत्यु के नौवें पहर तक का काल 1,260 भविष्यवाणी के दिनों का था। मृत्यु के नौवें पहर से पिन्तेकुस्त के नौवें पहर तक का अंतराल, बावन दिनों की अवधि में, 1,260 दिनों के एक फ्रैक्टल को निरूपित करता है।

पेंटेकोस्त का काल, जो एक फ्रैक्टल था, उन 1,260 दिनों के आरम्भ में है; और उन दिनों के अंत में पतरस भविष्यसूचक रूप से कैसरिया में तीसरे और नौवें—दोनों—घंटे पर स्थित है। दो कैसरिया एक भविष्यसूचक छह-घंटे की अवधि के अल्फा और ओमेगा का प्रतिनिधित्व करते हैं। दो कैसरिया की उसी भविष्यसूचक छह-घंटे की अवधि के भीतर पतरस छह दिन की यात्रा करता है और रूपान्तरण पर्वत पर पहुँचता है। वह पर्वत उस मुहरबन्दी का प्रतिनिधित्व करता है जिसकी परिणति रविवार के विधान पर होती है, जहाँ विजयी कलीसिया सब पर्वतों से ऊपर उठाई जाती है। वे छह दिन, कैसरिया से कैसरिया तक की छह-घंटे की अवधि का प्रतिनिधित्व करते हैं और उसी अवधि के भीतर एक फ्रैक्टल हैं, जैसे उसी पवित्र अवधि के आरम्भ में पेंटेकोस्त का काल एक फ्रैक्टल था।

प्रारम्भिक फ्रैक्टल पेंटेकोस्त के काल से सम्बद्ध वसन्तकालीन पर्वों की परिपूर्ति था। कैसरिया फिलिप्पी से रूपान्तरण के पर्वत तक का समापन फ्रैक्टल भी भविष्यसूचक रूप से पवित्र सप्ताह के साथ जुड़ा हुआ है। पर्वत पर पिता ने वाणी दी, जैसा कि उन्होंने मसीह के बपतिस्मा के समय किया था, और जैसा कि वे क्रूस से ठीक पूर्व करने वाले थे। पवित्र सप्ताह के आरम्भ से क्रूस तक पिता ने तीन बार श्रवणीय रूप से वाणी दी। एक बार बपतिस्मा के समय, फिर रूपान्तरण के पर्वत पर, और फिर आसन्न क्रूस की छाया में उन्होंने वाणी दी।

क्रूस उन 1,260 दिनों का ओमेगा है, जो उसके बपतिस्मा से आरम्भ हुए थे। बपतिस्मा और क्रूस दानिय्येल अध्याय नौ के पवित्र सप्ताह के विशिष्ट मार्गचिह्न हैं; फलस्वरूप रूपान्तरण का पर्वत भी उस पवित्र सप्ताह का एक अंग ठहरता है। यदि प्रथम और अंतिम, पवित्र सप्ताह की भविष्यवाणी द्वारा निर्दिष्ट मार्गचिह्नों की पूर्ति करते हैं, तो मध्य मार्गचिह्न को भी भविष्यसूचक अनिवार्यता से वही करना होगा।

बपतिस्मा पहला स्वर्गदूत है; रूपान्तरण का पर्वत दूसरा है, और क्रूस तीसरा है। पर्वत पर, परमेश्वर ने मूसा और एलिय्याह को अवशिष्ट कलीसिया के मार्गचिह्नों के रूप में चिन्हित किया। यह अनुप्रयोग पतरस, याकूब और यूहन्ना के त्रिविध प्रतीक से एकसूत्र में बँधा हुआ है। तीन अवसर ऐसे थे जब यीशु पतरस, याकूब और यूहन्ना को अपने साथ ले

गए। पहली बार याईर की पुत्री का पुनरुत्थान था, दूसरी बार रूपान्तरण, और तीसरी बार गथसमनी। पहली बार पतरस, याकूब और यूहन्ना एक पुनरुत्थित बारह-वर्षीय कुमारी के साक्षी बने।

और ऐसा हुआ कि जब यीशु लौटकर आया, तो लोगों ने उसे आनन्दपूर्वक ग्रहण किया, क्योंकि वे सब उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। और देखो, याईर नाम का एक मनुष्य आया, जो आराधनालय का प्रधान था; वह यीशु के पैरों पर गिर पड़ा और उससे विनती की कि वह उसके घर आए; क्योंकि उसकी एक ही बेटी थी, लगभग बारह वर्ष की, और वह मरने को पड़ी थी। परन्तु जब वह जा रहा था, तब भीड़ उसे दबा रही थी। लूका 8:40-42.

याइर नाम का अर्थ 'प्रकाश देने वाला' और 'दीप्तिमान तथा महिमामय होना' है। तीन अवसर ऐसे थे जब केवल पतरस, याकूब और यूहन्ना मसीह के साथ रहे; यह पहला था, और याइर उस प्रथम स्वर्गदूत का प्रतिनिधित्व करता है जो अपनी महिमा से पृथ्वी को आलोकित करता है। बारह वर्ष की कुंवारी उन कुंवारियों का प्रतिनिधित्व करती है जिन्हें एक लाख चवालीस हजार के रूप में पुनरुत्थित किया जाना है। बारह वर्ष से रक्तस्राव से पीड़ित स्त्री से उनकी भेंट के पश्चात, मसीह उस कुंवारी कन्या के घर पहुँचे।

और एक स्त्री, जिसे बारह वर्ष से रक्तस्राव था, जिसने अपनी सारी जीविका वैद्यों पर खर्च कर दी थी, और किसी से भी चंगी न हो सकी, वह उसके पीछे से आकर उसके वस्त्र के छोर को छू गई; और तुरन्त उसका रक्तस्राव रुक गया। लूका 8:43, 44.

बारह वर्ष की एक कुंवारी कन्या का उल्लेख किया गया है, और फिर अगले पद में बारह वर्षों से रक्तस्राव से पीड़ित एक स्त्री का उल्लेख किया गया है। उस स्त्री को रक्तस्राव की समस्या उतने ही वर्षों से थी, जितने वर्षों से वह कुंवारी जीवित थी। यीशु उस रक्तस्रावग्रस्त स्त्री के पास से होकर उस कुंवारी कन्या तक पहुँचने वाले थे। वह स्त्री प्रथम स्वर्गदूत के संदेश का प्रतीक है, जैसा कि लाओदिकिया को दिए गए संदेश में प्रस्तुत है। मसीह उस कुंवारी को पुनर्जीवित कर जीवन देने वाले थे, और वह रोगिणी स्त्री, अर्थात् लाओदिकियाई स्त्री, को अब भी दिव्यता को स्पर्श करने का एक क्षणिक अवसर प्राप्त था। एक बालक अंतिम पीढ़ी का प्रतीक है, और यीशु अंतिम दिनों की उस कुंवारी को उठाने के लिए उस लाओदिकियाई रोगिणी स्त्री के पास से होकर गुजर रहे हैं। जब वह कुंवारी पुनर्जीवित की जाती है, तब वह स्त्री या तो चंगी हो चुकी होती है, या फिर उसे पीछे छोड़ दिया गया होता है।

प्रथम स्वर्गदूत की एक विशेषता भय है, और भय के दो प्रकार होते हैं।

जब वह अभी बोल ही रहा था, तब आराधनालय के प्रधान के घर से कोई आया और उससे कहा, "आपकी बेटी मर गई है; गुरु को कष्ट न दीजिए।" परन्तु यीशु ने यह सुनकर उससे उत्तर दिया, "मत डरिए; केवल विश्वास कीजिए, और वह स्वस्थ हो जाएगी।" लूका 8:49, 50.

तब पतरस, याकूब और यूहन्ना उस कक्ष में प्रवेश करते हैं, जहाँ वह पुनरुत्थान घटित हुआ—जिसका प्रतीक मसीह का बपतिस्मा था—और जो प्रथम और तृतीय स्वर्गदूतों के शक्तिप्रदान का प्रतिनिधित्व करता है। रूपांतरण का पर्वत वह दूसरा अवसर है जब पतरस, याकूब और यूहन्ना साक्षी हैं। रूपांतरण का पर्वत दूसरे स्वर्गदूत का प्रतिनिधित्व करता है, और जब मसीह उन्हीं शिष्यों को गतसमनी ले गए, तो वह तृतीय स्वर्गदूत का प्रतिनिधित्व करता है। दूसरे चरण पर—अर्थात् रूपांतरण के पर्वत पर—एक "दोहरीकरण" होता है, क्योंकि उस पर्वत का मार्गचिह्न उन तीन अवसरों के मध्यवर्ती स्थान पर है जब पिता बोले। पहला अवसर उनके बपतिस्मा पर था, जो बारह-वर्षीय कुमारी के पुनरुत्थान के साथ मेल खाता है; दूसरा रूपांतरण का पर्वत था, और तीसरा क्रूस से ठीक पूर्व। जब पिता बोले वे तीन अवसर, और जब वे तीन शिष्य यीशु के साथ पृथक रूप से गए वे तीन अवसर, इस तथ्य से एक साथ बँधे हुए हैं कि दोनों क्रमों में दूसरा मार्गचिह्न रूपांतरण का पर्वत है।

और जब वह घर में आया, तो उसने पतरस, याकूब और यूहन्ना, तथा उस बालिका के पिता और माता के सिवाय किसी को भीतर जाने नहीं दिया। और सब रो रहे थे और उसके लिए विलाप कर रहे थे; पर उसने कहा, मत रोओ; वह मरी नहीं है, पर सो रही है। तब वे उसका उपहास करने लगे, क्योंकि वे जानते थे कि वह मर चुकी है।

पर उसने सबको बाहर निकाल दिया, और उसका हाथ पकड़कर पुकारकर कहा, बालिका, उठ। और उसकी आत्मा फिर लौट आई, और वह तुरन्त उठ खड़ी हुई; और उसने आज्ञा दी कि उसे भोजन दिया जाए। और उसके माता-पिता आश्चर्यचकित हो गए; पर उसने उन्हें आज्ञा दी कि जो हुआ है, उसे किसी से न कहें। लूका 8:51-56.

पतरस, याकूब और यूहन्ना उस प्रथम स्वर्गदूत के साक्षी बनते हैं जो कुँवारी के पुनरुत्थान पर प्रकट होता है। वह सोई हुई थी, जैसे लाज़रुस था। जब वह जागी, वह तुरंत उठ खड़ी हुई और उसे भोजन दिया गया। जब प्रकाशितवाक्य ग्यारह में एलिय्याह और मूसा का पुनरुत्थान होता है, तो वे तुरंत उठ खड़े होते हैं, और तब पवित्र आत्मा बिना माप के उंडेला जाता है, जो कुँवारी के भोजन का प्रतिनिधित्व करता है। रूपांतरण की घटना कैसरिया फिलिप्पी के छह दिन बाद हुई, सिवाय जब लूका इन घटनाओं का वर्णन करता है।

और ऐसा हुआ कि इन बातों के लगभग आठ दिन बाद, वह पतरस, यूहन्ना और याकूब को साथ ले गया, और प्रार्थना करने को एक पहाड़ पर चढ़ गया। और जब वह प्रार्थना कर रहा था, तब उसके मुख का स्वरूप परिवर्तित हो गया, और उसके वस्त्र श्वेत और दीप्तिमान हो गए। और देखो, दो पुरुष उससे बातें कर रहे थे, जो मूसा और एलिय्याह थे। लूका 9:28-30.

मत्ती और मरकुस दोनों स्पष्ट रूप से "छह दिन बाद" कहते हैं, और लूका "लगभग" आठ दिन कहता है। बाइबल के लेखकों ने समय-गणना की दो प्रणालियाँ अपनाई थीं; एक को समावेशी और दूसरी को अपवर्जक कहा जाता है। प्रथम दृष्टि में यह विरोधाभास प्रतीत हो सकता है, परन्तु यह तथ्य कि लूका ने "लगभग" कहा, इंगित करता है कि वह समावेशी पद्धति के अनुसार बोल रहा था; और जब मत्ती और मरकुस "छह दिन बाद" कहते हैं, तो वे यह दर्शाते हैं कि वे पूर्ण दिनों की गणना कर रहे थे—न तो उस दिन को गिनते हुए जो आठ-दिवसीय अवधि का आरम्भ था, और न ही उस दिन को जो उस अवधि का समापन था। यह भेद एक ही अवधि के दो संख्यात्मक प्रतीक उत्पन्न करता है; एक संख्या आठ है और दूसरा "छह दिन" है।

कैसरिया फिलिप्पी और रूपांतरण के पर्वत से संबंधित छः अथवा आठ दिन की अवधि के दो साक्ष्यों से यह स्थापित होता है कि जिस काल में मसीह एक लाख चवालीस हजार पर मुहर लगाते हैं, उस काल में 'आठ' नूह की नौका पर उपस्थित आठ प्राणियों का प्रतिनिधित्व करती है, और 'छः' फिलाडेल्फिया की छठी कलीसिया का—जो इस हेतु ठहराई गई है कि वह 'सातों में से' आठवीं कलीसिया हो। वे मूसा, एलिय्याह और मसीह के महिमाकरण के समय आठवीं में रूपांतरित होते हैं। पर्वत पर का महिमाकरण, मूसा के इतिहास में पर्वत पर हुए महिमाकरण द्वारा भी प्रतिरूपित है।

जब मूसा पर्वत पर चढ़ा, तब वह अपने साथ सत्तर पुरनियों तथा यहोशू को ले गया।

तब मूसा, हारून, नादाब और अबिहू, तथा इस्राएल के सत्तर पुरनिये ऊपर चढ़े। और उन्होंने इस्राएल के परमेश्वर को देखा; और उसके पांवों के नीचे नीलम पत्थर की सी ईंटों का काम था, जो अपनी स्वच्छता में जैसे आकाश का ही रूप था। और इस्राएल के पुत्रों के प्रधानों पर उसने हाथ न बढ़ाया; उन्होंने परमेश्वर को भी देखा, और खाया और पीया। और यहोवा ने मूसा से कहा, मेरे पास पर्वत पर चढ़ आ, और वहाँ ठहर; और मैं तुझे पत्थर की पट्टिकाएँ, और वह व्यवस्था तथा वे आज्ञाएँ, जो मैंने लिखी हैं, दूँगा, कि तू उन्हें सिखाए।

और मूसा और उसका सेवक यहोशू उठे; और मूसा परमेश्वर के पर्वत पर चढ़ गया। और उसने पुरनियों से कहा, 'तुम यहाँ हमारे लिये तब तक ठहरे रहो, जब तक हम तुम्हारे पास लौटकर न आ जाएँ; और देखो, हारून और हूर तुम्हारे साथ हैं; यदि किसी मनुष्य का कोई मामला हो, तो वह उनके पास आए।'

और मूसा पर्वत पर चढ़ गया, और एक बादल ने उस पर्वत को ढक लिया। और प्रभु की महिमा सीने पर्वत पर ठहरी रही, और वह बादल छह दिनों तक उसे ढका रहा; और सातवें दिन उसने बादल के मध्य से मूसा को पुकारा। और इस्राएल की सन्तानों की दृष्टि में पर्वत की चोटी पर प्रभु की महिमा का दृश्य भस्म करने वाली आग के समान था। और मूसा बादल के मध्य में प्रवेश कर पर्वत पर चढ़ गया; और मूसा चालीस दिन और चालीस रात

तक पर्वत पर रहा। निर्गमन 24:9-18.

प्रथम स्वर्गदूत का संदेश याइर की पुत्री का पुनरुत्थान था, जो मसीह के बपतिस्मा के साथ अनुरूप था। फिर छह दिन बाद रूपान्तरण के पर्वत की घटना घटी, जो दूसरा स्वर्गदूत है, जिसने क्रूस की ओर अग्रसर किया, और क्रूस तीसरा स्वर्गदूत है। दूसरे स्वर्गदूत के रूप में, उस पर्वत के पास दोहरा साक्ष्य है, क्योंकि पर्वत पर पिता की वाणी का उच्चारण तीनों में से दूसरी धारा से जुड़ता है। जिन तीन अवसरों पर पतरस, याकूब और यूहन्ना मसीह के साथ अनन्य रूप से उपस्थित थे, और जिन तीन अवसरों पर पिता ने वाणी की—दोनों ही पिता की वाणी के दूसरे प्रगटीकरण की पहचान कराते हैं; और दूसरी बार जब यीशु पतरस, याकूब और यूहन्ना को अपने साथ ले गए, वह रूपान्तरण का पर्वत था। रूपान्तरण के पर्वत का दूसरा मार्गचिह्न पिता की वाणी और उन तीन शिष्यों का दोहरा साक्ष्य रखता है, क्योंकि दूसरा संदेश सदा एक 'दुगुना' को निरूपित करता है।

सांयकालीन और प्रातःकालीन बलिदानों के बीच की छह घंटे की अवधि, जिसका संकेत मत्ती और मरकुस के कैसरिया फ़िलिप्पी और उस पर्वत से संबंधित 'छह दिनों' में मिलता है, मूसा के 'छह दिनों' द्वारा भी निरूपित है, जब तक कि सातवें दिन उसे बादल के भीतर बुलाया नहीं जाता।

यह रेखा दूसरे स्वर्गदूत के ठहराव-काल से आरम्भ होती है, क्योंकि मूसा सत्तर प्राचीनों को निर्देश देता है कि वे उसके लौटने तक 'ठहरें'। रेखा के प्रथम छह दिन पृथक हैं, किन्तु तब भी वे समग्र छियालिस दिनों का ही भाग हैं। ये छह दिन ऐसी अवधि हैं जो तीसरी परीक्षा तक ले जाती है, जिसका प्रतिनिधित्व चालीस दिनों द्वारा होता है। ये छियालिस दिन मन्दिर का प्रतीक हैं; और 'छह दिन' इन छह घंटों के समतुल्य हैं: मसीह की मृत्यु से पिन्तेकुस्त तक के छह घंटे, उनके क्रूस पर चढ़ाए जाने से उनकी मृत्यु तक के छह घंटे, कैसरिया से कैसरिया तक के छह घंटे, और पतरस के ऊपरी कोठरी में होने से मन्दिर तक के छह घंटे। मूसा वाचा की व्यवस्था प्राप्त कर रहा है, और यह निर्देश ले रहा है कि मन्दिर कैसे स्थापित किया जाए। यद्यपि पवित्रशास्त्र कहता है कि किसी मनुष्य ने परमेश्वर को नहीं देखा, तथापि प्राचीनों ने 'इस्राएल के परमेश्वर को देखा'। मूसा और प्राचीनों के साथ पहाड़ पर परमेश्वर का महिमाकरण, रूपान्तरण के पर्वत पर होने वाले महिमाकरण का प्रतिरूप था। दोनों में छह-दिवसीय अवधि सम्मिलित है। मूसा की रेखा में दूसरे स्वर्गदूत का ठहराव-काल और मन्दिर का प्रतिनिधित्व करने वाले पूरे छियालिस दिन सम्मिलित हैं। जिन चालीस दिनों में उसने व्यवस्था प्राप्त की, वे मुद्रांकन का प्रतिनिधित्व करते हैं।

पतरस तीसरे पहर कैसरिया फ़िलिप्पी में था; नौवें पहर वह कैसरिया मरितीमा की ओर जा रहा था; और छह से आठ दिनों में वह पर्वत पर था, मूसा के सत्तर प्राचीनों के साथ ठहरते हुए, जब उसे महिमामंडित प्रभु का दर्शन हुआ—जैसा दानिय्येल ने अध्याय दस में देखा था। दानिय्येल ने प्रभु को आमने-सामने देखा; वैसे ही गिदोन और सत्तर प्राचीनों ने भी देखा। रूपान्तरण का पर्वत वह स्थान है जहाँ लाओदीकियाई आन्दोलन के एक लाख चवालीस हजार, फिलाडेल्फियाई आन्दोलन के एक लाख चवालीस हजार में रूपान्तरित हो जाते हैं। वे आठवीं कलीसिया बनते हैं जो कि छठी कलीसिया है; अतः हम छह दिन और आठ दिन देखते हैं।

क्रूस पर चढ़ाए जाने से लेकर उनकी मृत्यु तक के छह घंटे, पिन्तेकुस्त के छह घंटे, कैसरिया से कैसरिया तक के छह घंटे, रूपान्तरण के पर्वत तक के छह दिन, और मूसा के वे छह दिन जो चालीस दिनों की ओर ले गए—ये सब एक ही रेखा हैं। कैसरिया फ़िलिप्पी, जो पानियम है, और रविवार के कानून के बीच, एक लाख चवालीस हजार मुद्रांकित किए जाते हैं। वह मुद्रांकन एक विभाजन उत्पन्न करता है।

और मैं, दानिय्येल, अकेला उस दर्शन को देखता रहा; क्योंकि जो पुरुष मेरे साथ थे, उन्होंने उस दर्शन को नहीं देखा; परन्तु उन पर बड़ी थरथराहट आ पड़ी, अतएव वे अपने आप को छिपाने के लिए भाग गए। दानिय्येल 10:7.

जब मूसा ने कहा, "तुम हमारे लिए यहीं ठहरो, जब तक हम फिर तुम्हारे पास लौट न आएँ," तब वह वरिष्ठों से पृथक हो गया। प्रतीक्षा-काल में मूसा सत्तर से पृथक हुआ, और सत्तर सप्ताह पूर्व वाचा के लोगों के लिए परख के काल का

द्योतक हैं। जब सत्तरवाँ सप्ताह समाप्त हुआ—और वही सत्तरवाँ सप्ताह वह पवित्र सप्ताह था जिसमें मसीह ने बहुतों के साथ वाचा की पुष्टि की—तब मसीह पूर्व वाचा के लोगों से पूर्णतः पृथक हो गए। वह अवधि, जिसमें पूर्व वाचा के लोग अपने रक्तस्राव के प्रश्न—जो उनके लिए यह विश्वास था कि वे अब्राहाम के रक्त से उद्धार पाए हैं—का समाधान कर सकते थे, समाप्त हो गई, और बारह वर्ष की कुँवारी सेवा के लिए पुनर्जीवित की गई। प्रतीक्षा-काल आरम्भ होते ही मूसा ने वाचा की व्यवस्था और मन्दिर की स्थापना के निर्देश प्राप्त किए।

जब पतरस, याकूब और यूहन्ना पर्वत पर थे, तब परमेश्वर की प्रजा पर मुहर लगना और उसके बाद उनका ध्वजस्वरूप ऊँचा उठाया जाना, उन्हीं वाचा-जन को एक लाख चवालीस हज़ार के मंदिर के रूप में निरूपित करता है। तब ग्यारहवें घंटे के मजदूर उस मंदिर में सम्मिलित किए जाते हैं।

यों प्रभु कहता है, न्याय का पालन करो और धर्म का आचरण करो; क्योंकि मेरा उद्धार निकट है, और मेरी धार्मिकता प्रकट होने को है। धन्य है वह मनुष्य जो यह करता है, और वह मनुष्य का पुत्र जो इसे थामे रहता है; जो सब्त को अपवित्र होने से बचाए रखता है, और अपने हाथ को किसी भी बुराई से रोकता है। और जो परदेशी का पुत्र अपने को प्रभु से मिलाता है, वह यह न कहे, 'प्रभु ने मुझे अपनी प्रजा से सर्वथा अलग कर दिया है'; और न नपुंसक यह कहे, 'देखो, मैं एक सूखा वृक्ष हूँ।' क्योंकि नपुंसकों के विषय में, जो मेरे सब्तों का पालन करते हैं, और वे बातें चुनते हैं जो मुझे भाती हैं, और मेरी वाचा को थामे रहते हैं, प्रभु यों कहता है: उन्हें मैं अपने घर में और अपनी दीवारों के भीतर, पुत्रों और पुत्रियों से भी उत्तम एक स्थान और नाम दूँगा; मैं उन्हें एक अनन्त नाम दूँगा, जो कभी काटा नहीं जाएगा। और परदेशियों के पुत्र भी, जो अपने को प्रभु से मिलाते हैं ताकि उसकी सेवा करें, और प्रभु के नाम से प्रेम रखें, और उसके दास बनें—हर एक जो सब्त को अपवित्र होने से बचाए रखता है और मेरी वाचा को थामे रहता है—उन्हें मैं अपने पवित्र पर्वत पर ले आऊँगा और अपने प्रार्थना-गृह में उन्हें आनन्दित करूँगा; उनकी होमबलियाँ और उनके बलिदान मेरी वेदी पर स्वीकार किए जाएँगे; क्योंकि मेरा घर सब लोगों के लिये प्रार्थना-गृह कहलाएगा।

जो इस्राएल के निकाले हुएों को इकट्ठा करता है, प्रभु परमेश्वर कहता है: तौभी मैं उसके पास, जो उसके पास इकट्ठे किए गए हैं, उनके अतिरिक्त औरों को भी इकट्ठा करूँगा। यशायाह 56:1-8.

पतरस, याकूब और यूहन्ना, तथा मूसा भी, उन "इस्राएल के बहिष्कृतों" का प्रतिनिधित्व करते हैं, जिन्हें उनसे घृणा करने वाले उनके भाइयों ने निकाल बाहर किया।

प्रभु यों कहता है: स्वर्ग मेरा सिंहासन है, और पृथ्वी मेरी पादपीठ है; जो गृह तुम मेरे लिये निर्मित करते हो, वह कहाँ है? और मेरे विश्राम का स्थान कहाँ है?

इन सब वस्तुओं को मेरे ही हाथ ने बनाया है, और ये सब भी अस्तित्व में आई हैं, प्रभु की यह वाणी है; पर मैं उसी की ओर दृष्टि करूँगा जो दीन है और खेदित आत्मा वाला है, और जो मेरे वचन से काँपता है। जो बैल का वध करता है, वह मानो मनुष्य का वध करता है; जो मेमने का बलिदान चढ़ाता है, वह मानो कुत्ते का गला काटता है; जो भेंट चढ़ाता है, वह मानो सूअर का रक्त अर्पित करता है; जो धूप जलाता है, वह मानो किसी मूर्ति को पूज्य ठहराता है। हाँ, उन्होंने अपनी ही राहें चुन ली हैं, और उनकी आत्मा उनके घृणित कर्मों में प्रसन्न होती है। मैं भी उनके भ्रमों को चुनूँगा, और उनके भय उन पर ले आऊँगा; क्योंकि जब मैंने बुलाया, तब किसी ने उत्तर न दिया; जब मैंने कहा, तब उन्होंने न सुना; पर उन्होंने मेरी आँखों के सामने बुरा किया, और वही चुना जिसमें मुझे प्रसन्नता नहीं।

प्रभु का वचन सुनो, हे तुम जो उसके वचन से कंपते हो; तुम्हारे वे भाई, जिन्होंने तुम से बैर किया और मेरे नाम के कारण तुम्हें बाहर निकाल दिया, कहते हैं, 'प्रभु की महिमा प्रकट हो'; परन्तु वह तुम्हारे आनन्द के लिये प्रकट होगा, और वे लज्जित होंगे। यशायाह 66:1-5।

"आनन्द" शब्द पवित्र शास्त्रों में अनेक बार और विविध रीति से आता है; "लज्जित" शब्द भी ऐसा ही आता है। योएल की पुस्तक से पतरस के संदेश के संदर्भ में, लज्जा बनाम आनन्द एक समानांतर प्रतिरूप है, जैसे बुद्धिमान

और मूर्ख, या गेहूँ और जंगली घास। योएल के संदर्भ में, लज्जा और आनन्द उन लोगों का प्रतिनिधित्व करते हैं जिनके पास तेल है, अर्थात् अन्तिम वर्षा का संदेश, बनाम वे जिनके पास वह नहीं है। केवल जब आप इस बारीकी को देखते हैं, तब आप इस कथन का गहन अर्थ समझ सकते हैं: "तुम्हारे भाई जो तुम से बैर रखते हैं, मेरे नाम के कारण तुम्हें निकाल बाहर करते हैं।" वे "भाई" वही हैं जिन्हें स्पॉल्डिंग और मैगन, पृष्ठ एक और दो, में "यहूदा के समान नाममात्र के एडवेंटिस्ट" कहा गया है, जो "हमारा विश्वासघात करके हमें कैथोलिकों के हाथ पकड़वाएँगे," "क्योंकि वे सब के कारण हम से घृणा करते थे, क्योंकि वे उसका खण्डन नहीं कर सकते थे।" तुम्हारे वे भाई जो तुम से बैर रखते हैं, तुम्हें भूमि के सब के संदेश—"मूसा के 'सात बार'" —के कारण निकाल बाहर करते हैं, जिसे खण्डित नहीं किया जा सकता। यहाँ मुख्य बात यह है कि तुम्हें एक सिद्धान्तगत वाद-विवाद, जैसा कि यशायाह उसे कहता है, के कारण निकाल बाहर किया जाता है; और वह सिद्धान्तगत वाद-विवाद अन्तिम वर्षा का संदेश है।

योएल उस संदेश को "नया दाखरस" कहता है, और यदि वह संदेश आपके पास है, तो आपके पास आनन्द है। यदि वह आपके पास नहीं है, तो आप योएल के मदिरापियों की भाँति जाग उठते हैं, और पाते हैं कि आपके मुख से नया दाखरस छीन लिया गया है। उसी समय आप भविष्यसूचक अर्थ में "लज्जित" होते हैं। जिस वर्ग के पास तेल है, उसके पास आनन्द है, और जिस वर्ग के पास तेल नहीं है, वह लज्जित है। तेल भी नया दाखरस है, और वह आनन्द से सम्बद्ध है। इसी कारण यशायाह कहता है, "प्रभु का वचन सुनो।" एक वर्ग सुनना चुनता है, और दूसरा नरसिंगे की ध्वनि पर ध्यान नहीं देता। यशायाह सुननेवाले वर्ग की विशिष्ट पहचान करता है, जब वह कहता है, "जो उसके वचन से काँपते हैं।" प्रभु उन लोगों को, जो 9/11 पर आए हुए संदेश के कारण निकाले गए थे, एकत्र करता है; और रविवार के विधान के समय वह यशायाह में उल्लिखित खोजों को, जिन्हें सूखे वृक्षों के रूप में दर्शाया गया है, एकत्र करता है। यदि वे वाचा को थाम लें, तो वे अब परमेश्वर के पवित्र पर्वत से पृथक नहीं किए जाएँगे।

खोजा और सूखा वृक्ष, दोनों, मृत्यु के प्रतीक हैं। खोजा संतान उत्पन्न नहीं कर सकता, और सूखे वृक्ष में जीवन नहीं होता। प्रतिज्ञा यह है कि यदि वे अन्यजाति—या ग्यारहवें घंटे के मजदूर—सब्त द्वारा निरूपित वाचा को स्वीकार करेंगे, तो उनके पुत्र-पुत्रियाँ होंगी। पहले वह इस्राएल के बहिष्कृतों को एकत्र करता है, फिर उन्हीं बहिष्कृतों को पताका के समान ऊँचा उठाता है, और तब अपने अन्य झुंड को एकत्र करता है। प्रथम और द्वितीय एकत्रीकरण उन कालखण्डों का प्रतिनिधित्व करते हैं: 9/11 से लेकर रविवार के कानून तक, जब पवित्र आत्मा का छिड़काव हो रहा है; और रविवार के कानून से लेकर उस घड़ी तक, जब मीकाएल खड़ा होता है और अन्तिम वर्षा बिना माप के उंडेली जाती है। दोनों कालखण्डों में अन्तिम वर्षा एक संदेश है; जो यदि आपके पास हो, तो आनन्द लाती है, और यदि न हो, तो लज्जा लाती है।

मत्ती का सुसमाचार तीन रेखाओं में विभाजित है, जो प्रकाशितवाक्य 14 के तीन स्वर्गदूतों का प्रतिनिधित्व करती हैं। इन तीनों रेखाओं में से प्रत्येक में उन तीन स्वर्गदूतों के फ्रैक्टल भी निहित हैं। ग्यारहवें अध्याय से बाईसवें अध्याय तक फैली हुई दूसरी रेखा केंद्रीय रेखा है, क्योंकि वह दूसरे स्वर्गदूत का प्रतिनिधित्व करती है, जो प्रथम और तृतीय स्वर्गदूतों के बीच स्थित है। उत्पत्ति और प्रकाशितवाक्य के वाचा संबंधी अध्यायों के संदर्भ में जब हम अध्याय 11 से 22 पर विचार करते हैं, तब मत्ती का सुसमाचार स्वयं एक केंद्रीय रेखा ठहरता है।

वाचा के बारह अध्यायों का केंद्र मत्ती का है, और मत्ती की तीन रेखाओं की मध्य रेखा भी उन्हीं बारह अध्यायों में पाई जाती है। उन बारह अध्यायों का केंद्र एक लाख चवालीस हजार की मुहरबंदी है। उस केंद्रीय बिंदु का प्रतिनिधित्व तीन पद करते हैं, जो उत्पत्ति और प्रकाशित-वाक्य के वाचा के बारह अध्यायों के तीन केंद्रीय पदों के साथ सुसंगत हैं।

पतरस केंद्र-बिंदु का केंद्र-बिंदु का केंद्र-बिंदु है, और वह प्रथम और अंतिम मसीही दुल्हन का प्रतिनिधित्व करता है। यह अल्फा और ओमेगा का हस्ताक्षर है। पाल्मोनी ने अंग्रेज़ी में पतरस के नाम के गूढ़ विन्यास को रचते समय, पतरस के नाम-परिवर्तन पर भी अपने हस्ताक्षर अंकित किए। यीशु ने पतरस से इब्रानी में बात की, और वह संवाद यूनानी में अभिलेखित हुआ और तत्पश्चात् अंग्रेज़ी में प्रस्तुत किया गया। अंग्रेज़ी में, पाल्मोनी ने अंग्रेज़ी वर्णमाला के 16वें अक्षर के द्वारा, उसके पश्चात् 5वाँ, उसके पश्चात् 20वाँ, उसके पश्चात् 5वाँ और उसके पश्चात् 18वाँ अक्षर लेकर, 'Peter'

नाम रखा—यह भली-भाँति जानते हुए कि जब वह पाल्मोनी के रूप में वह नाम रच रहा था, तो वह इब्रानी से यूनानी और वहाँ से अंग्रेज़ी तक जाएगा। उसने यह भी ऐसा रचा कि अंग्रेज़ी नाम उन पाँच अक्षरों के गुणन की एक गूढ़ युक्ति को संभव करे, जिससे संख्या एक लाख चवालीस हज़ार प्राप्त हो। पाल्मोनी, जो प्रथम और अंतिम भी है, ने यह ठहराया कि उन पाँच अंग्रेज़ी अक्षरों में से पहला और अंतिम क्रमशः 16वाँ और 18वाँ हों, क्योंकि 'Peter' नाम मत्ती 16:18 में आना था।

पतरस के संबंध में इन सब बातों के बावजूद, हमें अभी भी "स्वर्ण अनुपात" पर विचार करना आवश्यक है। स्वर्ण अनुपात का प्रतिनिधित्व मत्ती 16:18 द्वारा होता है, क्योंकि यह अनुपात 1.618 है। स्वर्ण अनुपात का संबंध प्रकृति के फ़ैक्टलों से है; और जब पाल्मोनी पतरस को मत्ती 16:18 में स्थापित करता है, तब पाल्मोनी यह निर्दिष्ट कर रहा है कि यशायाह 22:22 में एल्याकीम के कंधे पर जो भविष्यवाणी संबंधी कुंजी रखी जाती है, तथा उसी खंड में पतरस और कलीसिया को जो भविष्यवाणी संबंधी कुंजियाँ दी जाती हैं, उनमें भविष्यवाणी संबंधी फ़ैक्टल सम्मिलित हैं।

तीसरे पहर की कैसरिया फिलिप्पी से नौवें पहर की कैसरिया मरितिमा तक का क्रम, उस काल का फ़ैक्टल रूप है जो तीसरे पहर, जब मसीह क्रूसित किए गए थे, से लेकर उस नौवें पहर तक फैला है जब कुर्नेलियुस ने पतरस को बुलवाने के लिए लोगों को भेजा। क्रूसारोपण के तीसरे पहर से लेकर पित्तेकुस्त के दिन मंदिर में नौवें पहर पतरस के होने तक का पित्तेकुस्तीय काल, क्रूस से कुर्नेलियुस तक के 1,260 दिनों का एक फ़ैक्टल है। पिता द्वारा तीन बार वाणी करना, तीन स्वर्गदूतों का एक फ़ैक्टल है; और वैसे ही वे तीन अवसर हैं जब यीशु ने केवल पतरस, याकूब और यूहन्ना को साथ लिया। वे पद, जिनमें पतरस एक लाख चवालीस हज़ार का चित्रण करता है, उनमें सांकेतिक रूप से निहित भविष्यवाणी-संबंधी सूचना उतनी ही गूढ़ है जितना कोई सत्य कभी रहा है; तौभी हमने अभी तक दानिय्येल ग्यारह में पनियम पर पतरस को स्थापित नहीं किया है।

हम इस अध्ययन को अगले लेख में जारी रखेंगे।

यीशु मसीह के प्रेरित पतरस की ओर से, पुन्तुस, गलातिया, कप्पदूकिया, आसिया और बिथुनिया में तितर-बितर हुए परदेशियों के नाम: पिता परमेश्वर के पूर्वज्ञान के अनुसार चुने हुए, आत्मा के पवित्रीकरण के द्वारा, यीशु मसीह के लहू के छिड़काव और आज्ञाकारिता के लिए। तुम्हें अनुग्रह और शांति बहुतायत से प्राप्त हो। हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता धन्य हों, जिन्होंने अपनी बड़ी दया के अनुसार, मृतकों में से यीशु मसीह के पुनरुत्थान के द्वारा, हमें एक जीवित आशा के लिए फिर से जन्म दिया— ऐसी विरासत के लिए जो अविनाशी, अकलुषित और अम्लान है, जो तुम्हारे लिए स्वर्ग में सुरक्षित रखी गई है; तुम जो परमेश्वर की सामर्थ्य से विश्वास के द्वारा उस उद्धार के लिए सुरक्षित रखे जाते हो, जो अंतिम समय में प्रकट होने को तैयार है।

इसी में तुम अत्यन्त आनन्द करते हो, यद्यपि अब थोड़े समय के लिए, यदि आवश्यक हो, नाना प्रकार की परीक्षाओं से तुम क्लेशित हो, ताकि तुम्हारे विश्वास की परीक्षा—जो नाशमान सोने से भी, यद्यपि वह आग में परखा जाता है, कहीं अधिक बहुमूल्य है—यीशु मसीह के प्रगट होने पर स्तुति और आदर और महिमा के लिये सिद्ध पायी जाए। जिसे तुम ने देखा नहीं, तौभी प्रेम करते हो; और अब भी, यद्यपि उसे नहीं देखते, तौभी उस पर विश्वास करके, अवर्णनीय और महिमा से परिपूर्ण आनन्द से आनन्दित होते हो, अपने विश्वास का परिणाम, अर्थात् अपनी आत्माओं का उद्धार, प्राप्त करते हुए।

जिस उद्धार के विषय में भविष्यद्वक्ताओं ने परिश्रमपूर्वक पूछताछ और सूक्ष्म खोज की, जिन्होंने उस अनुग्रह की भविष्यवाणी की जो तुम्हारे लिये आनेवाला था। वे इस बात की खोज कर रहे थे कि उनमें विद्यमान मसीह का आत्मा किस समय या किस प्रकार के समय का संकेत करता है, जब वह पूर्व से ही मसीह के दुःखों और उन दुःखों के पश्चात होनेवाली महिमा की गवाही देता था। और उन्हें यह प्रकट किया गया कि वे अपने लिये नहीं, वरन् हमारे लिये इन बातों की सेवा कर रहे थे, वे बातें जो अब तुम्हें उनके द्वारा सुनाई गई हैं जिन्होंने स्वर्ग से भेजे गए पवित्र आत्मा के साथ तुम्हें सुसमाचार सुनाया, जिन बातों में स्वर्गदूत भी झाँककर देखने की इच्छा रखते हैं।

अतः अपने मन की कमर कसो, सचेत रहो, और उस अनुग्रह पर अन्त तक आशा रखो जो यीशु मसीह के प्रगटीकरण पर तुम्हारे लिये प्रकट किया जाएगा। आज्ञाकारी सन्तान के समान, अपनी अज्ञानता में जो पहले वासनाएँ थीं उनके अनुसार अपने आप को न ढालो; परन्तु जिसने तुम्हें बुलाया है वह जैसा पवित्र है, वैसे ही तुम भी अपने समस्त चाल-चलन में पवित्र बनो; क्योंकि लिखा है, पवित्र बनो, क्योंकि मैं पवित्र हूँ।

और यदि तुम उस पिता को पुकारते हो, जो किसी का पक्ष न लेकर प्रत्येक व्यक्ति के कर्म के अनुसार न्याय करता है, तो यहाँ अपने परदेशवास का समय भय सहित व्यतीत करो; क्योंकि तुम जानते हो कि तुम्हें नाशमान वस्तुओं से—अर्थात् चाँदी और सोने से—अपने उस व्यर्थ चाल-चलन से, जो तुम्हें पितरों की परंपरा से मिला था, छुड़ाया नहीं गया, परन्तु मसीह के बहुमूल्य रक्त से, जैसे एक निर्दोष और निष्कलंक मेम्ने का। वह तो जगत की स्थापना से पहले ही ठहराया गया था, परन्तु तुम्हारे कारण इन अन्तिम समयों में प्रगट किया गया—ताकि तुम, जो उसके द्वारा परमेश्वर पर विश्वास करते हो, जिसने उसे मृतकों में से जिलाया और उसे महिमा दी, अपना विश्वास और आशा परमेश्वर पर ही स्थिर रखो। चूँकि तुमने आत्मा के द्वारा सत्य की आज्ञाकारिता में अपने प्राणों को शुद्ध कर लिया है, जिससे भाईचारे का निष्कपट प्रेम उत्पन्न हुआ है, तो शुद्ध हृदय से एक-दूसरे से उत्कट प्रेम रखो; क्योंकि तुम नाशमान नहीं, परन्तु अविनाशी बीज से, अर्थात् परमेश्वर के उस वचन के द्वारा जो जीवित है और सदैव स्थिर रहता है, नये सिरे से जन्मे हो। क्योंकि सारी देह घास के समान है, और मनुष्य की सारी महिमा घास के फूल के समान; घास सूख जाती है और उसका फूल झड़ जाता है, परन्तु प्रभु का वचन युगानुयुग बना रहता है। और यही वह वचन है जो सुसमाचार द्वारा तुम्हें सुनाया गया है। 1 पतरस 1:1-25.